गुरु नानक – सबद ६८

अमलु करि धरती बीजु सबदो करि सच की आब नित देहि पाणी ॥

रागु सिरिरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २४

अमलु करि धरती बीजु सबदो करि सच की आब नित देहि पाणी ॥
होइ किरसाणु ईमानु जमाइ लै भिसतु दोजकु मूड़े एव जाणी ॥१॥
मतु जाण सहि गली पाइआ ॥
माल कै माणै रूप की सोभा इतु बिधी जनमु गवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥
ऐब तनि चिकड़ो इहु मनु मीडको कमल की सार नही मूलि पाई ॥
भउरु उसतादु नित भाखिआ बोले किउ बूझै जा नह बुझाई ॥२॥
आखणु सुनणा पउण की बाणी इहु मनु रता माइआ ॥
खसम की नदरि दिलहि पसिंदे जिनी करि एकु धिआइआ ॥३॥
तीह करि रखे पंज करि साथी नाउ सैतानु मतु कटि जाई ॥
नानकु आखै राहि पै चलणा मालु धनु कित कू संजिआही ॥४॥२७॥

सार: खेती और आध्यात्मिकता की प्रक्रियाएँ गहरी और सार्थक समानताएँ साझा करती हैं जो परिवर्तन की प्रेरणा देती हैं। दोनों ही पोषण की यात्राएँ हैं जो गहन परिणामों और आत्मविकास की ओर ले जाती हैं। खेती में पहला कदम भूमि को तैयार करना और फसल के विकास में बाधा डालने वाले खरपतवारों को हटाना होता है। उसी तरह, आध्यात्मिक विकास नकारात्मकता, अहंकार, भय और संदेह के मानसिक अव्यवस्था को दूर करके शुरू होता है। जिस तरह किसान बीज बोकर उनकी देखभाल करता है और अच्छी फसल पाता है उसी तरह आध्यात्मिक साधक भी अपने अंदर ज्ञान और सद्गुणों की खेती करता है ताकि वह स्थायी शांति और अर्थपूर्ण जीवन जी सके ।

अमलु करि धरती बीजु सबदो करि सच की आब नित देहि पाणी ॥
जीवन को अच्छे कर्मों के लिए मिट्टी की तरह तैयार करें। ज्ञान के बीज बोएँ, ईमानदारी को नदी की तरह बहने दें और इन सद्गुणों को बनाए रखने के लिए रोज़ सीचें।

होइ किरसाणु ईमानु जमाइ लै भिसतु दोजकु मूड़े एव जाणी ॥१॥
धार्मिकता के साधक की भूमिका अपनाएँ और अज्ञानी मन को यह पहचानने के लिए पोषित करें कि स्वर्ग और नर्क हमारे सकारात्मक और नकारात्मक विचारों की मात्र छवि हैं। (१)

मतु जाण सहि गली पाइआ ॥
यह विश्वास करके धोखा न खाएँ कि सर्वव्यापी शक्ति की अनुभूति सिर्फ़ शब्दों से ही हो जाएगी, कर्म के बिना ज्ञान नहीं मिलता।

माल कै माणै रूप की सोभा इतु बिधी जनमु गवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥
भौतिक संपत्ति का घमंड और शारीरिक सुंदरता के प्रति मोह एक व्यर्थ जीवन की ओर ले जाता है। (१)(विराम)

ऐब तनि चिकड़ो इहु मनु मीडको कमल की सार नही मूलि पाई ॥
नकारात्मकता, कीचड़ के की तरह हैं। कठोर मानसिकता, अपने नीहित अच्छाइयों से अनजान, स्थिर दलदल मे सीमित रहने वाले मेंढक की तरह है जो अपने पास खिलने वाले कमल की सुंदरता का मूल्य नहीं समझ सकता।

भउरु उसतादु नित भाखिआ बोले किउ बूझै जा नह बुझाई ॥२॥
भौंरा चेतना का प्रतीक है, ऐसी मार्गदर्शक शक्ति जो अंतर्दृष्टि प्रदान करने के लिए भिनभिना कर ज्ञान का संदेश देता है। लेकिन इसकी समझ तभी आती है जब हम उस सांझे ज्ञान को सक्रिय रूप से ग्रहण करते हैं। (२)

आखणु सुनणा पउण की बाणी इहु मनु रता माइआ ॥
बस बोलने और सुनने में संलग्न होना हवा के झोंके की तरह है इसी प्रकार, यदि मन सांसारिक चिंताओं के मोह में फँसा हो तो ज्ञान का सार शीघ्र ही लुप्त हो जाता है।

खसम की नदरि दिलहि पसिंदे जिनी करि एकु धिआइआ ॥३॥
निर्माता द्वारा बनाई गई रचना उनके दिलों को प्रसन्न करती है जिन्होंने अस्तित्व की एकता के चिंतन को अपनाया है। (३)

तीह करि रखे पंज करि साथी नाउ सैतानु मतु कटि जाई ॥
अगर मन में नकारात्मकता और शैतानी विचार भरे हों तब अनुष्ठानिक तीस दिन के रोज़े रखना और दिन की पाँच वक़्त नमाज़ पढ़ना व्यर्थ है।

नानकु आखै राहि पै चलणा मालु धनु कित कू संजिआही ॥४॥२७॥
नानक कहते हैं कि एक सार्थक रास्ता चुनें क्योंकि मृत्यु निश्चित है। तो क्यों दुनयावी धन-संपत्ति की खोज में भागें? (४)(२७)

तत्त्व: गुरु नानक हमें जीवन की नश्वरता से ऊपर उठकर सद्गुणों को विकसित करने का मार्ग चुनने के लिए कहते हैं। यह स्वीकार करते हुए कि मृत्यु निश्चित है वह सवाल करते हैं कि व्यक्ति को सांसारिक सम्पत्तियों की अस्थायी खोज में क्यों उलझा रहना चाहिए। वह उद्देश्यपूर्ण और आध्यात्मिक जागरूकता के साथ जीने के महत्व पर ज़ोर देते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com